

चक्कर एक आम समस्या है। इसके कारण सामान्य भी हो सकते हैं तथा गंभीर भी। चक्करों के रोगी को कई प्रकार के अनुभव होते हैं जैसे अंधेरा आना, चलने में असंतुलन आना, सब चीजें घूमती हुई लगना, घबराहट आदि। चक्करों का सबसे आम कारण है ब्रेन की नसों में क्रिस्टल्स का बन जाना। इससे रोगी जैसे ही करवट लेता है, अथवा पलंग पर जैसे ही बैठता है या लेटता है रोगी का सिर घूम जाता है अथवा सब चीजें घूमती हुई लगती हैं। साथ में रोगी को उल्टी का जी, उल्टी होना, घबराहट एवं पसीना भी हो सकता है। इन चक्करों को सुबह के चक्कर या सिर हिलाने के चक्कर भी कहते हैं। यह चक्कर दवाइयों से कुछ घंटों के लिये दब जाते हैं और फिर शुरू हो जाते हैं। कई रोगी महीनों दवाओं का सेवन करते रहते हैं। कई बार रोगियों की मँहगी मँहगी जॉचें जैसे एम. आर. आई आदि हो जाती हैं। चक्करों की सही जानकारी चक्कर किस प्रकार के आ रहे हैं उसके विश्लेषण से बनती है। सिर को एक विशेष पद्धति से घुमाने से ब्रेन की नसों के इन क्रिस्टल्स को निकाल दिया जाता है। डॉ. अजित वर्मा ने चक्करों के उपचार का यह प्रशिक्षण कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों (इंग्लैंड एवं जर्मनी) से प्राप्त किया है। चक्करों में कई गलत धारणाएँ भी प्रचलित हैं जैसे – स्पॉडिलोसिस से चक्कर आना, गर्दन में कॉलर का उपयोग आदि करना।